Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कौटिल्य के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ. माया रावत*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, हरदा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – कौटिल्य के आर्थिक विचार, समृद्धि, सुरक्षा और समाज की सामाजिक व आर्थिक कल्याण पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। आदर्शवाद से हटाकर भौतिकवाद की आधारशिला पर रखा। वर्तमान युग भी भौतिकवाद को अधिक महत्व देता है। कौटिल्य की आर्थिक अवधारणा में राज्य की प्रभुता संरक्षण एवं सर्वव्यापी हस्तक्षेप की नीति अपनायी गई है।

शब्द कुंजी – अर्वाचीन उन्नति,अपवंचन,मन्त्री, पुरोहित, सेनापति, आयुक्त, नायक, दण्डपाल,बुद्धिजीवी, राजनीतिक चिन्तक, राजनेता।

प्रस्तावना – कौटिल्य के आर्थिक विचार, समृद्धि, सुरक्षा और समाज की सामाजिक व आर्थिक कल्याण पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। आदर्शवाद से हटाकर भौतिकवाद की आधारशिला पर रखा। वर्तमान युग भी भौतिकवाद को अधिक महत्व देता है। कौटिल्य की आर्थिक अवधारणा में राज्य की प्रभुता संरक्षण एवं सर्वव्यापी हस्तक्षेप की नीति अपनायी गई है।कौटिल्य के विचार आज भी कई मामलों में प्रासंगिक हैं। ये विचार समृद्धि, सुरक्षा, और समाज के कल्याण पर केंद्रित हैं। कौटिल्य के विचारों में नैतिक मानकों का महत्व भी शामिल है।

आर्थिक विचार–कौटिल्य के आर्थिक विचारों में समृद्धि, सुरक्षा, और समाज के कल्याण पर ध्यान दिया गया है। कौटिल्य के आर्थिक विचारों में भौतिकवाद की आधारशिला रखी गई है।

राजनीतिक विचार–कौटिल्य के विचारों में राज्य की प्रभुता, संरक्षण, और सर्वव्यापी हस्तक्षेप की नीति शामिल है, कौटिल्य ने राज्य के सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों के जरिए प्रजा के विकास का लक्ष्य रखा था।

न्याय प्रणाली–कौटिल्य ने न्याय प्रणाली और दंड व्यवस्था की विस्तृत विवेचना की है, कौटिल्य ने दो प्रकार के न्यायालयों का उल्लेख किया है – धर्मस्थीय और कण्टकशोधन।

भ्रष्टाचार–कौटिल्य ने राजकीय कर्मचारियों से ईमानदारी से कर्तव्यपालना का आग्रह किया था, भ्रष्टाचार पर कौटिल्य के विचार आज भी आधुनिक भारत में प्रासंगिक हैं।

कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में शासन, भ्रष्टाचार के सिद्धांत एवं व्यवहार संबंधित मुद्दों पर चर्चा की है।कौटिल्य के अनुसार 'यथा राजा तथा प्रजा' का अर्थ है, किसी राज्य के लोगों का चरित्र वहाँ राजा के समान होगा। यदि राजा में नेतृत्व, जवाबदेही, बुद्धिमत्ता, ऊर्जा, अच्छा नैतिक आचरण तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ, त्वरित निर्णय लेने में सक्षमता आदि गुण हैं तो वह अपनी प्रजा को इन गुणों को अपनाने के लिये प्रेरित करेगा।

स्वरूप/ढाँचा:

1. वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कई प्रकार की राजनीतिक कमियाँ व्याप्त हैं। जैसे अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने हेतु धन–बल का प्रयोग, भाई–भतीजावाद तथा वंशवाद आदि।
2. भारत की राजनीतिक संस्कृति में राजनीतिक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता की कमी, राजनीतिक दलों में अवसरवादिता, गुटबाजी, लोगों को एकजुट करने हेतु पहचान की राजनीति अर्थात् जाति, धर्म, भाषा जैसे पहचान चिह्नों का उपयोग जैसे लक्षण परिलक्षित होते हैं।
3. हालिया समय में राजनीतिक दलों पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फेक न्यूज, असहिष्णुता तथा उग्रवादी विचार फैलाने के आरोप लगाए गए हैं।
4. ये राजनीतिक लक्षण भारतीय लोगों को प्रभावित करते हैं और जैसा कि कौटिल्य ने 'यथा राजा तथा प्रजा' कहा था, लोगों में राजनीतिक नेतृत्व के चरित्र का अनुसरण करते हुए ये उनमें परिलक्षित होते हैं।
5. लोगों को एकजुट करने के लिये जाति, धर्म, भाषा आदि पहचान चिह्नों के इस्तेमाल की वजह से समाज में तनाव और संघर्ष बढ़ रहा है। हमारे नेताओं ने विविधता में एकता का संदेश दिया था, लेकिन हालिया समय में चुनाव जीतने हेतु इस विविधता का दुरुपयोग किया जा रहा है। कई सांप्रदायिक तथा जातिगत दंगे होते हैं जिनमें आम नागरिक आपराधिक हिंसा में शामिल होते हैं एवं 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली उक्ति को पुष्ट करते हैं।

इसी प्रकार कर अपवंचन भी भारतीय अर्थव्यवस्था का एक लक्षण है। आम नागरिक आय के स्रोतों को जाहिर न करके कर में हेर–फेर और करों से बचने की प्रवृत्ति रखते हैं। इस तरह का भ्रष्टाचार राजनीतिक नेतृत्व से अलग नहीं है क्योंकि वह भी भ्रष्टाचार लिप्त होता है तथा वहाँ भी सार्वजनिक धन का इस्तेमाल अपने लिये किया जाता है।

वर्तमान भारतीय संदर्भ में फेक न्यूज का उपयोग का इस बात का परिणाम है कि राजनीतिक दल जानते हैं, इसके उपयोग से आम लोगों को भिन्न–भिन्न समुदायों के खिलाफ असत्यापित, असंतुलित जानकारी के माध्यम से पूर्वाग्रहित कर चुनावी लाभ उठाया जा सकते है। वर्तमान में यह

समाज में परिलक्षित भी हो रहा है, जहाँ लोग असत्यापित दावों पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं। उदाहरण के लिये, भीड़ द्वारा की जाने वाली हत्याएँ, गुजरात और बेंगलुरु से प्रवासियों का पलायन आदि।

निष्कर्ष–कौटिल्य ने कहा है कि 'अपनी प्रजा के सुख में राजा की प्रसन्नता निहित होती है तथा उनके कल्याण में ही उसका कल्याण होता है। वह केवल उन बातों को अच्छा नहीं मानेगा जो उसे प्रसन्न करती हैं, बल्कि वह उन विषयों पर भी ध्यान देगा जो उसकी प्रजा के लिये लाभकारी हैं।' इसलिये भारत में राजनीतिक नेतृत्व को आत्मनिरीक्षण करने और भारतीय लोगों के कल्याण के लिये काम करने की आवश्यकता है। उन्हें नेतृत्व, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम, विरोधी नेताओं के लिये सम्मान, अखंडता, नैतिक जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित करना चाहिये। बाद में यह गुण आम लोगों में भी परिलक्षित होंगे।कौटिल्य के विचार आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उनके विचारों में समृद्धि, सुरक्षा और समाज के कल्याण के प्रति चिंता है, कौटिल्य के विचारों में भौतिकवाद की आधारशिला रखी गई है, जो वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है।

कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता इस प्रकार है:

1. कौटिल्य के आर्थिक विचारों में समाज कल्याण को मुख्य केंद्र में रखा गया है।
2. कौटिल्य ने राज्य से अपेक्षा की थी कि वह गरीबों और असहायों की मदद करे।
3. कौटिल्य ने कहा था कि राजा की प्रसन्नता उसकी प्रजा के सुख में निहित होती है।
4. कौटिल्य ने विदेशी व्यापार के महत्व को स्वीकार किया था।
5. कौटिल्य ने करारोपण की दर कम करने की बात कही थी।
6. कौटिल्य ने एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की बात कही थी।
7. कौटिल्य ने निर्धन वृद्ध जनों तक लाभ पहुंचाने की बात कही थी।
8. कौटिल्य ने भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की बात कही थी।
9. कौटिल्य ने लोक सेवकों और राजा के लिए नैतिक मानकों पर जोर दिया था।
10. कौटिल्य ने राजनीतिक नेतृत्व में सहिष्णुता, त्याग, प्रेम, और अखंडता जैसे गुणों को विकसित करने की बात कही थी।
11. कौटिल्य के राजनीतिक विचारों के बारे में विकिपीडिया पर ये जानकारी दी गई है।
12. कौटिल्य ने राजतंत्र की संकल्पना को अपने विचारों का केंद्र बनाया था।
13. राजा को अपने शत्रुओं की तुलना में मित्रों की संख्या बढ़ाने की सलाह दी थी.
14. निर्बल राज्यों को शक्तिशाली पड़ोसियों से सतर्क रहने की सलाह दी थी।
15. मंडल सिद्धांत दिया था।
16. राजा को युद्धों के लिए सक्षम रहने के लिए निरंतर शिकार करने की सलाह दी थी।
17. साम, दाम, दंड, और भेद की नीति को श्रेष्ठ बताया था।
18. राजा को चार वेदों और सरकार के चार विज्ञानों (अंविकिकी, त्रयी, वार्ता, और दंडनीति) से परिचित होने की सलाह दी थी।
19. राजा को कोष में शक्ति या बल पाने की सलाह दी थी।
20. राजनय का सांगोपांग विवेचन और विश्लेषण किया था।
21. राजनयिक नियमों के निर्माण में राष्ट्रीय हित और राजतंत्र का सशक्त बनाना अपने मुख्य उद्देश्य के तौर पर रखा था।
22. नैतिकता का त्याग और धर्मनिरपेक्षता का मार्ग अपनाया था।
23. राजा को प्रशासन के सुचारू संचालन और लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहने की सलाह दी थी।

कौटिल्य के महत्त्व और राजनीतिक चिन्तन से उनकी देन – भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में कौटिल्य एक महान् विभूति का नाम है। कौटिल्य प्राचीन भारत के महान् सम्राट् चन्द्रगुप्त का निर्माता और उसके वंश के साम्राज्य का संस्थापक है। वह यथार्थवादी विचारक, महान् कूटनीतिक, व्यवहारवादी राजनीतिज्ञ और नीतिशास्त्र का महान् विद्वान् था, परन्तु दुर्भाग्य से इस महान् बुद्धिजीवी, राजनीतिक चिन्तक, राजनेता और सुप्रसिद्ध 'अर्थशास्त्र' के लेखक के जीवन के बारे में प्रामाणिक तथ्यों का अभाव है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि उनका कोई एक नाम भी सुनिश्चित नहीं है। उन्हें कौटिल्य, चाणक्य अथवा विष्णुगुप्त तीन नामों से जाना जाता है।कौटिल्य भारत के प्रमुख राजनीतिक विचारक हैं। उनकी रचना 'अर्थशास्त्र' में संवैधानिक, राजनीतिक,कटनीति आर्थिक समाज व परिवार से सम्बन्धित जीविका विचारों का अनोखा संग्रह है, जिन पर कोई भी भारतीय गर्व सकता है।

कौटिल्य के महत्त्व और राजनीतिक चिन्तन से उनकी देन का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन के पिता कौटिल्य भारतीय राजनीतिक चिन्तन के पिता हैं। जैसे प्लेटो और अरस्तु पाश्चात्य राजनीतिक चिंतक के पिता माने जाते हैं।भारत के राजनीतिक विचारकों पर उनका (कौटिल्य कर) प्रभाव देखा जा सकता है।कामन्दक, कालिदास, कात्यायन,सोमदेव सूरी पर उनके विचारों का स्पष्ट प्रभाव है।

अर्थशास्त्र सभी विचारों का सार– कौटिल्य से पहले भारतीय राजनीतिक चिन्तन इधर–उधर बिखरा हुआ था, कौटिल्य ने उस चिन्तन को संग्रहीत करके उसका वैज्ञानिक विवेचन किया। नि:सन्देह अर्थशास्त्र पूर्व के सभी राजनीतिक विचारों का महत्त्वपूर्ण संग्रह और सार है।

राजनीति का स्वतन्त्र अध्ययन – कौटिल्य ने पहली बार राजनीतिशास्त्र को एक पृथक् शास्त्र बनाने का काम किया है। कौटिल्य से पहले धर्म और नैतिकता की पृष्ठभूमि में ही राजनीतिक विचारों का अध्ययन होता रहा था। कौटिल्य ने राजनीतिशास्त्र को ज्ञान की एक क्रमबद्ध, व्यापक और तर्कसंगत शाखा बनाया है।

सप्तांग सिद्धान्त – कौटिल्य की एक महान् देन उनका सप्तांग सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के द्वारा कौटिल्य ने राज्य के सात अंगों (प्रकृतियों) का उल्लेख किया हैय जैसे स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र। यह सिद्धान्त आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने कौटिल्य के समय में महत्त्वपूर्ण थे।

कौटिल्य व्यावहारिक राजनीति के प्रणेता हैं– कौटिल्य व्यावहारिक राजनीति के जनक हैं। कौटिल्य ने शासन कला, कूटनीति, विदेश नीति, आदि के सम्बन्ध में व्यावहारिक विचार प्रकट किये हैं। इस दृष्टि से कौटिल्य की रचना 'अर्थशास्त्र', अरस्तु की रचना 'पॉलिटिक्स' से भी श्रेष्ठ है।

दण्डनीति (राजनीति) की प्रधानता– कौटिल्य ने धर्म को राजनीति से पृथक् ही नहीं किया है, वरन् राजनीति को धर्म से ऊपर रखा है। कौटिल्य सभी विद्याओं की सिद्धि को दण्डनीति पर आधारित मानता है। कौटिल्य के

शब्दों में, 'सम्पूर्ण सांसारिक जीवन (लोक यात्रा) दण्डनीति पर आश्रित है।' कौटिल्य ने दण्ड के उद्देश्य, स्वरूप, दण्ड निर्धारण के सिद्धान्त, मृत्यु दण्ड आदि का विस्तार से उल्लेख किया है। कौटिल्य की दण्ड व्यवस्था व्यावहारिक है।

लोक-कल्याणकारी राज्य के संस्थापक- कौटिल्य का राज्य पुलिस राज्य न होकर, श्लोक-कल्याणकारी राज्य है। कौटिल्य का राज्य अपने नागरिकों को वही सुख-सुविधाएँ देता है, जो आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण विचारधारा लोक-कल्याणकारी राज्य है। कौटिल्य ने राज्य के वही कार्य बताए हैं, जिन्हें आधुनिक राज्य करते हैं, जैसे- वाणिज्य व व्यवसायों की व्यवस्था, अस्पतालों का निर्माण, विधवा, अनाथो, रोगियों, दुखियों की आर्थिक सहायता, कृषि और पशुपालन, अनुसंधान आदि। कौटिल्य ने राजा और प्रजा के बीच पिता और पुत्र जैसे सम्बन्धों पर बल दिया है।

कौटिल्य के सामाजिक विचार-कौटिल्य ने सामाजिक व्यवस्था पर भी विचार प्रकट किये हैं। कौटिल्य ने 'वर्णाश्रम' धर्म का समर्थन किया है। उन्होंने विवाह, तलाक, वेश्यावृत्ति, शराब, जुआ, गोहत्या, ऋण, सूदखोरी, दास प्रथा आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रकाश डाला है।

प्रशासनिक व्यवस्था-कौटिल्य ने प्रशासनिक व्यवस्था पर भी विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। कौटिल्य ने विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों के विभिन्न कार्यों का उल्लेख किया हैय जैसे मन्त्री, पुरोहित, सेनापति, आयुक्त, नायक, दण्डपाल आदि। प्रशासन का जितना विस्तृत उल्लेख कौटिल्य ने किया है, उतना प्लेटो व अरस्तु ने भी नहीं किया है।

कौटिल्य की अन्य देन कौटिल्य की अन्य कई महत्त्वपूर्ण देन भी हैं, जैसे (क) (ख) राजदूत व्यवस्था, (ग) मण्डल सिद्धान्त, (घ) पाइगुण्य नीति, (ङ) गुप्तचर व्यवस्था। मन्त्रिपरिषद्,

कौटिल्य ने अर्थव्यवस्था पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। कौटिल्य ने कृषि, जमीन, सिंचाई, पशुपालन, व्यापार-वाणिज्य, खानं और उद्योग जैसे आर्थिक पहलुओं पर विचार किया है। कौटिल्य ने राज्यकी कर नीति का भी विवेचन किया है। आज के समय में भी कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित कर नीति और अर्थव्यवस्था अपना महत्त्व रखती है।

निष्कर्ष- नि:सन्देह कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' भारतीय अर्वाचीन उन्नति का प्रतीक है। कौटिल्य ने जीवन से सम्बन्धित सभी पक्षों का वर्णन किया है। राज्य का जितना विशद् और व्यापक विवेचन कौटिल्य ने किया है।उतना किसी ने नहीं। कौटिल्य ने मैकियावली से लगभग 2000 वर्ष पहले यह कह दिया कि राजनीति और नैतिकता दोनों पृथक् पृथक् हैं। कौटिल्य ने राजतन्त्र का समर्थन अवश्य किया है, परन्तु उसका राजा निरंकुश नहीं है। कौटिल्य ने राजा के नैतिक कर्त्तव्यों पर बल दिया है। इसीलिए कौटिल्य अनैतिक भी नहीं है। कौटिल्य ने राजा की शिक्षा, गुणों, दिनचर्या, शक्तियों और कार्यों पर जो प्रकाश डाला है, उससे स्पष्ट है कि कौटिल्य का राजा नैतिक गुणों से युक्त है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यू.एस. स्मिथ, अरली हिस्ट्री आफ इन्डिया 1914 पेज 112-113
2. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, प्रथम अधिकरण
3. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अधिकरण- 15, अध्याय- 1, श्लोक-
4. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 1/19/39
5. प्राचीन हिन्दू अर्थशास्त्र की रूपरेखा, नवराज चालिसे, पृष्ठ 188
6. कौटिल्य, अर्थशास्त्र 5/2
7. कौटिल्य, अर्थशास्त्र 5/90/2
8. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 2/5
9. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 2/21, 2/22
10. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, 5/90/10
11. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अनुवादक वाचस्पति गैरोला, चौबीसवाँ अध्याय
12. डी.आर. शामाशास्त्री KautilyasArthshastra
13. के.टी. शाह Ancient Foundations of Indian Economic thought
14. सन्तोष कुमार दास Economic History of Anicient India
15. के0वी0 रंगास्वामी Aspets of Ancient Indian Economic thought.

****